Q.1 ↗ व्यक्तिगत / वैयक्तिगत विभिन्नताएँ :- (कालटन) मनोवैज्ञानिक

Introduction :- प्रत्येक प्राणी अपने जन्म से ही विशेषताओं को लेकर पैदा होता हैं। जो विशेषताएँ उसको माता - पिता के पूर्वजों से मिलती हैं। इसी के साथ पर्यावरण में भी छात्र एक - दूसरे से भिन्न होते हैं। एक कक्षा या एक समूह के विद्यार्थियों में विभिन्न प्रकार की भिन्नताएँ हैं।

Meaning :- जब दो बालक विभिन्न समानताएँ रखते हुए भी आपस में भी विभिन्न व्यवहार करते हैं। तो इसे व्यक्तिगत विभिन्नताएँ कहा जाता हैं। प्रत्येक व्यक्ति में जैविक, मानसिक, सांस्कृतिक अंतर पाया जाता हैं। इसी अंतर के कारण एक व्यक्ति को दूसरे से भिन्न माना जाता हैं। अत: कोई भी दो व्यक्ति समान नहीं होते। यहाँ तक जुडवा बच्चों में भी असमानता पाई जाती हैं।

Definition :- 1) जेम्स के अनुसार व्यक्तिगत भिन्नता के अनुसार / अंतर्गत कोई व्यक्ति अपने समूह के शारीरिक तथा मानसिक गुणों के औसत से जितनी भिन्नता रहती हैं उसे व्यक्तिगत विभिन्नता कहते हैं।

2) स्किनर के अनुसार व्यक्तिगत भिन्नताओं में सम्पूर्ण व्यक्तित्व का कोई भी ऐसा पहलू सम्मलित हो सकता हैं, जिसका माप किया जा सकता हैं।

3) टायलर के अनुसार शरीर के आकार की स्वरूप शारीरिक गति सम्बंधी क्षमताओं, बुद्धि, उपलब्धि ज्ञान रुचियों अभिवृत्तियों और व्यक्तित्व के लक्षणों की माप की जाने वाली विभिन्नताओं को व्यक्तिगत विभिन्नताओं कहते हैं।

> वैयक्तिक विभिन्नता की प्रकृति :-

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

1) विचलनशीलता तथा प्रधानता :-
व्यक्ति के किसी गुण अथवा लक्षण की दृष्टि से किसी समूह के व्यक्ति एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। अर्थात् लक्षण एवं योग्यता का विकास सभी में समान नहीं होता है।

2) अभिवृत्ति तथा अधिगम की भिन्न गति :-
अभिवृत्ति तथा विकास सभी व्यक्तियों में न तो एक साथ प्रारंभ होता है और न ही एक गति होती है। कुछ व्यक्तियों में विकास की गति बहुत तेजी से होती है। वह अन्य की अपेक्षा शीघ्र ही सक्षमता प्राप्त कर लेता है। लेकिन वातावरण तथा जैविक कारण से कुछ व्यक्तियों में विकास की गति धीमी होती है।

3) लक्षणों का अंतर संबंध :-
व्यक्ति के लक्षणों का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। वे एक-दुसरे की भाँति सम्मान तथा संयुक्त होते हैं। जैसे बालक की कक्षा के धारणा की भाँति उसे हीन समझते हैं। जैसे अभिरुचि, रूचि, क्रियाकलाप आदि।

4) वंशानुक्रमीय तथा वातावरणीय कारकों का प्रभाव :-
व्यक्तियों के कुछ गुण वंशानुक्रम तथा वातावरण के प्रभाव से होता है। जैसे स्वास्थ्य, शारीरिक गठन, अनुभव, पारिवारिक संबंध, विद्यालय की प्रकृति तथा बालक को मिलने वाली शिक्षा पूरी तौर से व्यक्ति में लक्षणों को प्रभावित करती है।

Q2) > वैयक्तिक विभिन्नताओं के क्षेत्र या स्वरूप :-
1) शारीरिक विभिन्नता
2) मानसिक विभिन्नता
3) भावनात्मक विभिन्नता
4) रूचि एवं दृष्टिकोण में विभिन्नता
5) अधिगम प्रक्रिया में विभिन्नता
6) विशिष्ट योग्यताओं में विभिन्नता

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

7) चारित्रिक विभिन्नता
8) सांस्कृतिक और भौगोलिक विभिन्नता
9) ज्ञानात्मक योग्यताओं में भिन्नता
10) व्यक्ति में विभिन्नता
11) अभिप्रेरणाओं में भेद
12) समायोजन में भेद
13) लैंगिक विभिन्नता
14) एक ही व्यक्ति में वैयक्तिक विभिन्नताएँ
15) सीखने में विभिन्नताएँ
16) उपलब्धियों में विभिन्नताएँ
17) अभिरुचियों में विभिन्नताएँ
18) चरित्र तथा व्यक्तित्व की विभिन्नताएँ
19) स्वभाव तथा मनोवृत्तियों में भिन्नता

> वैयक्तिक विभिन्नताओं के प्रकार :-
1) अंतर वैयक्तिक विभिन्नताएँ
2) अन्तः वैयक्तिक विभिन्नताएँ

> वैयक्तिक भेदों या भिन्नता के कारण :-
1) आयु एवं बुद्धि का प्रभाव
2) शिक्षा एवं आर्थिक दशा का प्रभाव
3) लिंग या यौनगत भेद का प्रभाव
4) जाति, प्रजाति एवं देश का प्रभाव
5) वातावरण
वातावरण से संबंधित निम्नलिखित कारक वैयक्तिक भिन्नताओं को उत्पन्न करते हैं -
1) पारिवारिक वातावरण
2) निर्धनता
3) पक्षपात पूर्ण वातावरण
4) अत्यधिक सुरक्षा
5) विद्यालय का वातावरण

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

6) वंशानुक्रम का प्रभाव
7) अन्य कारण

> व्यक्तिगत भिन्नताओं के शैक्षिक शैक्षणिक महत्त्व :-

1) योग्यताओं में भिन्नता :- प्रत्येक व्यक्ति के कार्य करने की योगिताओं में भिन्नता पाई जाती हैं। ये योगिताएँ शारीरिक और मानसिक होती हैं। कई बालक शारीरिक रूप से इतने अयोग होते हैं कि वे कक्षा की शिक्षा को ग्रहण कर पाने में कठिनाई होती हैं जैसे आँख कमजोर होना, कम सुनाई देना आदि। कई बालक मानसिक रूप से अयोग हैं। वे साधारण बुद्धि वाले बालक जितना कार्य भी नहीं कर पाते।

2) अभिवृत्तों में भिन्नता :- बालकों की अभिवृत्तियों में भिन्नताएँ पाई जाती हैं। यह उपलब्धि उसकी रूचि, अभिवृत्ति, योगिताओं तथा वातावरण से बहुत प्रभावित होता है। ये भिन्नता लिंग, आयु, वातावरण रूचि आयु को प्रभावित करती हैं। जैसे लड़के - गणित वे तकनीकी क्षेत्र व लड़कियाँ गृह - विज्ञान में सह साहित्य अभिवृद्धि होती हैं।

3) उपलब्धियों में भिन्नता :- प्रत्येक बालक की उपलब्धि दूसरे बालक से भिन्न होती हैं। एक ही कक्षा में एक ही परिवार के अलग -2 बच्चों उपलब्धियाँ अलग - 2 हो सकती हैं। जैसे कुछ बच्चों के गणित में उपलब्धि अधिक होती हैं। परन्तु इतिहास व अंग्रेजी में कमजोर हो सकते हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

APCO
Date
Page 40.

4) व्यक्तिगत भेदों के कारण बच्चों का वर्गीकरण :-

1) मानसिक योग्यताओं के आधार पर
2) रुचियों के आधार पर
3) लिंग भेद के आधार पर
4) सामाजिक - आर्थिक स्तर के आधार पर
5) शारीरिक दोषों के आधार पर

Q3) > व्यक्तिगत भेदों पर अध्यापक के कार्य पर प्रभाव :-

1. वर्गीकरण :-
अध्यापक कक्षा के विद्यार्थियों को उनकी योग्यताओं, रुचियों और क्षमता के आधार पर वर्गीत कर सकता है।

2. व्यक्ति ध्यान :-
अध्यापक को एक ही कक्षा में सभी विद्यार्थियों पर ध्यान देना है। व्यक्तिगत ध्यान से ही प्रभावशाली पिछड़े विद्यार्थी की विभिन्नताओं को ध्यान देते हुए सहायक करते हैं।

3. पाठ्यक्रम :-
कुछ विद्यार्थी की रुचि विज्ञान में है। कुछ की गणित तो दूसरों की वाणिज्य में। इस प्रकार की समस्या में यह आवश्यक है। कि विद्यार्थियों के लिए विषय होने चाहिए।

4. पढ़ने की विधियाँ :-
सभी विधियाँ सब विद्यार्थियों के अनुकूल नहीं होती। अध्यापक को विधि का चुनाव व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए करें। जिससे विद्यार्थियों को लाभ हो सके।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

5. समायोजन संबंधी समस्याएँ :-

इन विभिन्नताओं के कारण विद्यार्थी कक्षा में अपने आप को समायोजित नहीं कर पाते। किसी को पाठ्यक्रम कठिन लगता है। किसी को समय सारणी अनुकूल नहीं होता तथा दूसरो के साथ मिलजुल कर नहीं रहते। एक अध्यापक को चाहिए की भिन्न समस्या को समझकर उनके समायोजन के लिए उचित शैक्षिक वातावरण उत्पन्न करें।

> नियमित कक्षा कक्ष में बाल केन्द्रित शिक्षा :-

अध्यापक को अपने विद्यार्थियों की सम्भावना और समस्या सीमाओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्य योजना तैयार करनी चाहिए।

> शिक्षा का कार्य सभी को समान स्तर पर लाना नहीं है :-
अध्यापक का उद्देश्य सबको एक स्तर पर लाने का होना चाहिए। बल्कि उसका उद्देश्य है ही कि वह हर विद्यार्थी को जाने और उसी के अनुसार से शिक्षा प्रदान करें।

> निर्देशक प्रदान करना :-

सभी विद्यार्थी समान होते तो निर्देशक की आवश्यकता ही नहीं होती। न कि पाठ्य क्रम की कोई समस्या आती। इसलिए विद्यार्थियों की विभिन्नता को भिन्न मनोवैज्ञानिक के परिक्षण के माध्यम से उनकी रुचियाँ, अभिवृत्ति योगिताएँ एवं उपलब्धि के अनुसार शैक्षिक और व्यवसायिक निर्देशक प्रदान करें।

> वैयक्तिक विभिन्नताओं के प्रकार :-
1) अभिरुचियों में विभिन्नता
2) शामक योग्यताओं में विभिन्नताएँ
3) लैंगिक विभिन्नता

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

4) एक ही व्यक्ति में वैयक्तिक विभिन्नताएँ
5) उपलब्धियाँ में विभिन्नताएँ
6) रूचियों में भिन्नता
7) चरित्र में विभिन्नताएँ
8) संवेगात्मक विभिन्नताएँ
9) शारीरिक विभिन्नताएँ
10) मानसिक विभिन्नताएँ
11) सीखने में विभिन्नताएँ

> वैयक्तिक विभिन्नताओं को मापने की विधियाँ :-

1) निरीक्षण या अवलोकन विधि :- (वही दर्शन विधि)
दो प्रकार की होती है - नियंत्रण और अनियंत्रण (इसमें व्यक्ति के विशेष गुण को जाना जाता है। व्यक्ति के व्यवहारों के भिन्न-2 परिस्थितियों का अध्ययन करना यह विधि सार्वभौमिक होती है। और इसके प्रवर्तक वॉरसन है। दोनों ही प्रकार के अवलोकन से ही किसी व्यक्ति विशेष के व्यवहार का गुणों को जान सकते है।

2) प्रश्नावली विधि :-
प्रश्नावली विधि के सबसे प्राचीन प्रवतन से सुकरत (यूनान) और शिक्षा के क्षेत्र में इस विधि का प्रयोग गुडवर्थ ने किया था। ये चार प्रकार की होती है।
1) प्रतिबंधित / बंद (सीमित :-(हाँ या ना)
2) खुली प्रश्नावली :-(विस्तार मुक्त)
3) चित्रित प्रश्नावली :- (चित्र के माध्यम से)
4) मिश्रित प्रश्नावली :- (तीनों का मिला-जुला हो)

3) साक्षात्कार :-
इस विधि को सबसे पहले अमेरिका में शुरू

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

किया गया था। जब दो व्यक्ति के बीच आमने -सामने बातचीत होती है। उसे साक्षात्कार कहते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं:-

1) निर्देशीत :- (पहले से निश्चित प्रश्न)
2) अनिर्देशीत :- (प्रश्न की कोई सीमा नहीं होती)
3) समाहार :- (इन दोनों से मिले होते हैं।)

4) प्रेक्षेपी प्रविधियाँ :-

प्रक्षेपी शब्द का प्रयोग सिगमन फ्राइड और इस विधि को प्रमावृत्ति विधि। अपनी बातों, विचारों, भावनाओं आदि को स्वयं न बताकर किसी अन्य माध्यम से व्यक्त करता है।

अचेतन मन - दबी हुई इच्छाओं को बाहर निकालना प्रक्षेपी विधि में टी.ए.टी टैस्ट होता है।

T.A.T (The mare Apperction test)

(प्रासंगिक अंतर्बोध / कथा प्रसंग परीक्षण)
(मार्गन मुरे (1935) में दिया था)

C.A.T (children Apperction test)

(बाल प्रसंग परीक्षण)
(ल्योपोल्ड बैलॉक 1948)
इसके बाद (डा० अरनेकस क्रिस 1951)

I.B.T (Ink Block test)

(स्याही धब्बा परीक्षण)
(हरमन रोसा)

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

S.C.T ( Sencentence Complete test)
( वाक्य पूर्ति परीक्षण )
( पाईन व टैण्डलर 1930)

F.W.A.T ( Fruidom would Apprection test)
( स्वतंत्र शब्द सहचारि परीक्षण )
( गालटन )

5) मनोवैज्ञानिक परीक्षण :-
व्यक्तिगत विभिन्नता को जानने के लिए तीन प्रकार के परीक्षण उपलब्ध हैं। जैसे रूचि, अभिरूचि और बुद्धि परीक्षण। मनोवैज्ञानिक परीक्षण 2 प्रकार के होते हैं - व्यक्तिगत एवं सामूहिक। जब परीक्षण एक समय में एक ही व्यक्ति का किया जाता है। तो व्यक्तिगत परीक्षण होता है। सामूहिक परीक्षण जब एक समय में एक परीक्षण को एक से अधिक व्यक्ति में किया जाता है उसे सामूहिक परीक्षण कहते हैं।

6) माता - पिता की रिपोर्ट :-
कई बार विद्यार्थियों के कुछ गुण या अवगुण का माता - पिता से पता चलता है। जिस योग्यता का अध्यापक अनुमान नहीं लगा पाता।

7) मापदंड मूल्यांकन :-
यह मूल्यांकन कई प्रकार से होता है। जैसे तीन बिंदु पर आधारित, पाँच बिंदु पर आधारित और सात-बिंदु पर आधारित होता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Ques: व्यक्तित्व के मूल्यांकन की विभिन्न प्रक्षेपण विधियों का परिचय।

Ans: → व्यक्तित्व के प्रकार :-

i) जंग द्वारा वर्गीकरण :-
जंग ने लोगों को तीन वर्गों में बाँटा गया है।

ii) बहिर्मुखी :-
ये लोग सामाजिक मिलनसार, संतुष्ट प्रसन्नचित्त चिन्ताओं से मुक्त होते हैं। हमेशा बाहरी मुख की ओर उन्मुख रहते हैं। स्वभाव और सामाजिक कार्य में रुचि लेते हैं। विचार की अपेक्षा कार्य को अधिक महत्त्व देते हैं। इनमें लचीलापन और समायोजन की योग्यता होती है।

iii) अन्तर्मुखी :-
ये लोग बहिर्मुखी लोगों से विपरीत होते हैं। ये अपेक्षाशील, आत्मकेन्द्रीत तथा असामाजिक होते हैं। ये हंसी मजाक पसंद नहीं करते केवल अपने आंतरिक संसार में ही व्यस्थ रहते हैं। ये दूसरों को खुश रखने का प्रयास नहीं करते।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

iii) मध्यमुखी (उभयमुखी) :-
मध्यमुखी के लोग होते हैं। जो न पूर्ण रूप से अन्तर्मुखी होते हैं। और न बहिर्मुखी ऐसे व्यक्तियों में कुछ अन्तर्मुखी गुण होते हैं कुछ बहिर्मुखी गुण होते हैं।

iv) शैल्डन का वर्गीकरण :-
शारीरिक आकार के आधार पर शैल्डन ने व्यक्तियों को तीन भागों में बाँटा गया है।

1) गोलाकार :- (Endomorphic)
इन लोगों का शरीर मोटा, भारी तथा गोलाकार होता है। ये लोग आराम पसंद करते हैं। प्राचीनक्रिया कम विकसित होता है।

2) आयतकार :- (Mesomorphic)
इन श्रेणी के लोगों की हड्डियाँ तथा मांसपेशियाँ मजबूत तथा काफी शक्तिशाली होते हैं। दृढ़ निश्चित और हार नहीं मानते हैं।

3) लम्बाकार :- (Ectomorphic)
ये लोग कमजोर, एकांत, लम्बे, लज्जा वाले व्यक्ति होते हैं।

v) क्रैशमर का वर्गीकरण :- (Germany, शारीरिक आधार पर वर्गीकरण किया है।)

1. स्थूलकाय, गोलाकार, पिकनिक इन नामों से जाना जाता है।
मिलनसार छोटा कद, मोटा शरीर, सामाजिक, विनोद प्रिय, लोकप्रिय, आराम तलब

2. सुडौलकाय (एथलेटिक्स) :-
खिलाड़ी प्रवृति शरीर सुडौल दृढ़ निश्चयी आशावादी होते हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

3. एस्थेनिक / (क्षीण काय) / कृशकाय :-
निर्बल शरीर, लंबे शर्मीले, एकान्त प्रिय, निराशावादी

4. मिश्रित काय :-
तीनों का मिश्रण
शैल्डन (1940) → शारीरिक संरचना
"सोमेटोटाइप सिद्धान्त कहा गया"

vi) आइजेंक का वर्गीकरण :-
आइजेंक ने लोगों को चार वर्गों में बांटा जो निम्नलिखित हैं:-

a) बहिर्मुखी :-
ये लोग सामाजिक, मिलनसार, संतुष्ट, प्रसन्नचित व चिन्ताओं से मुक्त होते हैं।

b) अन्तर्मुखी :-
ये व्यक्ति लज्जाशील, एकान्तप्रिय, निराशावादी तथा असामाजिक होती हैं। ये चिन्तन और लेखन में रुचि रखते हैं।

c) साइकोटिसिज्म :-
इस वर्ग में आने वाले व्यक्ति समाज विरोधी होते हैं। वे लोग दूसरों की परवाह नहीं करते।

d) न्यूरोटिसिज्म :-
ये लोग मानसिक रोगी होते हैं। वे अपने चारों ओर के वातावरण में कठिनाइयों का अनुभव करते हैं। इस बीमारी के निम्नलिखित लक्षण हैं अथवा इन लोगों की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:-

- चिन्ता और भय
- आत्मकेन्द्रित
- अन्तर्दृष्टि का अभाव
- असन्तोष और प्रसन्नता
- असफलता
- तनाव और चिड़चिड़ापन
- स्वयं की पहचान का अभाव

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

> व्यक्तिगत की विधीयाँ :-

1) व्यक्तिगत ~~भिड~~ व्यक्तिनिष्ठ विधि :-

व्यक्ति अपने स्वंय के बारे में सूचना प्रदान करता है।

a) आत्मकथा :- (अन्तर्दर्शी) /(प्राचीनतम विधि)

व्यक्ति द्वारा स्वंय पर लिखी गई कहानी को आत्मकथा कहते हैं। आत्मकथा विधि मनोवैज्ञानिक द्वारा प्रयोग में लाई गई। व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न लक्ष्यों, प्राप्तियों, इच्छाओं, अनुभवों, समस्याओं, रुचियों, अभिरुचियों आदि के बारे में स्वंय लिखता है। इसके प्रवर्तक (विलियम वुन्ट) और शिष्य था (टिचनर)

b) व्यक्ति इतिहास :-

जीवन वृत। केस स्टडी के नाम से भी जानी जाती है। प्रवर्तक (टाईमैन) इस विधि में व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्ण इतिहास होता है। इसमें व्यक्ति के परिवार सामाजिक संबंध रुचियाँ, दृष्टिकोण, शारीरिक तथा मानसिक तौर के योग्यताओं के तथ्यों को एकत्रित किया जाता है। इन सभी का विश्लेषण करके किसी भी समस्या की गहरी ~~तक~~ जाया जा सकता है। इस विधि का प्रयोग पिछडे या अपराधी लोग। बालकों के अध्ययन में किया जाता हैं।

c) साक्षात्कार विधि :-

सबसे पहले शुरुआत अमेरिका में हुई थी। दो व्यक्तियों के आमने-सामने होने वाली बात को साक्षात्कार कहते हैं।

d) प्रश्नावली विधि :-

इसके प्रवर्तक हैं प्राचीन के सुकरात (यूनान) के और शिक्षा का क्षेत्र में इस विधि में वुड्वर्थ है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

2) वस्तुनिष्ठ विधि :-

a) निरीक्षण विधि :-

इस विधि में निरीक्षण द्वारा व्यक्ति का अनुमान किया जाता हैं। छोटे बच्चों के अध्ययन में इस विधि का अधिक प्रयोग किया जाता हैं।

i) नियन्त्रित निरीक्षण :-

यह निरीक्षण का सबसे बड़ा दोष हैं। इसमें व्यक्ति बनावटी व्यवहार करता हैं। जिससे उसके व्यक्तित्व का सही अनुमान नहीं हो पाता।

ii) अनियन्त्रित निरीक्षण :-

इस विधि के अंतर्गत व्यक्ति के व्यवहार का चुपके से निरीक्षण किया जाता हैं।

b) परिस्थिति परीक्षण विधि :-

इस विधि के अंतर्गत व्यक्ति को विशेष परिस्थिति में रखकर उसके व्यक्तित्व की किसी विशेषता का मूल्यांकन किया जाता हैं।

c) रेटिंग स्केल :-

इस विधि द्वारा व्यक्ति के विभिन्न गुणों का अनुमान लगाया जाता हैं। इसमें व्यक्ति के स्केल का पता लगाया जाता हैं।

स्टेज रेटिंग स्केल -

- पूर्ण ईमानदार
- साधारण ईमानदार
- औसत ईमानदार
- कम ईमानदार
- बहुत कम ईमानदार
- बेईमान

d) सामान्यिति विधि :-

इस विधि के प्रवर्तक हैं J.L Moreno हुये

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

विधि के समूह से व्यक्तियों के बीच पाई जाने वाली स्वीकृति, अस्वीकृति, आकर्षण और विकर्षण का अध्ययन किया जाता है। व्यक्ति के सामाजिक गुणों का मूल्यांकन किया जाता है। इस विधि में प्रश्न की सूची तैयार कि जाती है।

e) <u>व्यक्तित्व परिसूची :-</u>

यह विधि प्रश्नावली विधि से मिलती जुलती रहती है। व्यक्तित्व परिसूची में प्रश्न केवल विशेष से ही सम्बन्धित होते हैं। इस विधि में व्यक्ति अपने दोषों और कमजोरियों को छुपा लेता है।

3. <u>प्रक्षेपी विधि :-</u>

प्रक्षेपी विधि का अर्थ है अपनी अचेतन मन, विचारों, संवेगों, डरों और दमित इच्छाओं को किसी बाह्य वस्तु के साथ जोड़ना है।

प्रक्षेपी विधि में व्यक्तित्व को समझने का प्रयत्न करते हैं।

i) रोर्शा का स्याही का धब्बा परीक्षण
ii) विषय - सम्बन्धी अन्तर्बोध परीक्षण
iii) बालकों का अन्तर्बोध
iv) वाक्य पूर्ति
v) शब्द साहचर्य
vi) मुक्त संसर्ग
vii) हस्तलेख की विशेषताएँ
viii) कहानी कहने और कहानी पूरी करने की परीक्षा

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

## बौद्धिक प्रतिभाशालीता.

> अर्थ :-

वह बालक जिसकी मानसिक आयु वर्ग के अनुपात में औसत से बहुत अधिक हो अथवा जिस बालक अपने आयु के बालकों से साधारण अथवा विशेष योग्यता में श्रेष्ठ हो, उसे प्रतिभावान बालक कहा जाता है। जैसे - अगर कोई बालक अपेक्षाकृत कम आयु में ही कोई नया चमत्कार या रिकॉर्ड कायम करता है तो वह बालक प्रतिभावान कहलाएगा।
कॉलस्निक के अनुसार वह हर बच्चा, जो अपने आयु-स्तर के बच्चो में किसी योग्यता में अधिक हो और जो हमारे समाज के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण नई देन दे, प्रतिभावना कहलाता है।
विट्टी के अनुसार प्रतिभावान बच्चे वे बच्चे होते हैं, जिनका मानवीय कोशिश में कार्य सदा शानदार होता है और जो पढ़ाई में उत्तम होते हैं।
डा. अब्दुल रॉफ के अनुसार प्राय: उच्च बुद्धिलब्धि को प्रतिभाशाली होने का संकेत माना जाता है। अत: 'प्रतिभावान बालक' शब्द का अभिप्राय बालक की उच्च बुद्धि लब्धि से लिया जाता है।
टरमन के अनुसार 140 बुद्धि-लब्धि से ऊपर वाले बालक (I.Q. >140) प्रतिभावान माने जा सकते हैं।

> प्रतिभावान बालकों की विशेषताएँ :-

A) शारीरिक विशेषताएँ :-

1) टरमन और विटी ने प्रतिभावान बालकों और उनके माता-पिता के स्वास्थ्य के इतिहास का अध्ययन करने के पश्चात् यह पाया की प्रतिभावान बालक व उनके माता-पिता सामान्य बालकों और उनके माता-

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

पिता के स्वास्थ्य से बेहतर स्वास्थ्य वाले होते हैं।
2) प्रतिभावान बालकों में किशोरावस्था के लक्षण शीघ्र दिखाई देते हैं।
3) इनकी ज्ञान इन्द्रियाँ तीव्र होती हैं।
4) इनमें शारीरिक दोष भी बहुत कम होते हैं।
5) प्रतिभावान बालकों के सामान्य बालकों से दो मास पहले दाँत निकाल लेते हैं। सामान्य बालकों से 2 मास पहले चलना - फिरना शुरू कर देते हैं।

B) संवेगात्मक विशेषताएँ :-

1) इस प्रकार के बालक सामाजिक दृष्टि से भी सुदृढ़ होते हैं।
2) संवेगात्मक रूप से प्रतिभावान बालक स्थिर और समायोजित होते हैं।
3) ये प्रसन्नचित, मिलनसार और अच्छे चरित्र वाले होते हैं।
4) प्रतिभावान बालकों में कल्पना करने, सोचने की, विश्लेषण करने की, निर्णय इत्यादि करने की क्षमता दूसरों से अधिक होती है।

C) सामाजिक विशेषताएँ :-

1) प्रतिभावान बालक, क्योंकि हसँमुख व प्रसन्नचित रहते हैं, अतः वे सामाजिक तौर पर अधिक परिपक्व तथा सर्वप्रिय होते हैं।
2) टरमन (1925) के अध्ययन के अनुसार प्रतिभावान बालक अधिक ईमानदार, विषम परिस्थितियों में विश्वसनीय होते हैं।
3) वे अपनी आयु से बड़ों के मित्र बनना चाहते हैं, परन्तु खेलते अपनी आयु के बालकों के साथ हैं।
4) इनमें नेतृत्व की विशेषताएँ बहुत होती हैं।
5) प्रतिभावान बालकों में घुलने मिलने की योग्यता में कमी पाई गई है।

D) शैक्षणिक उपलब्धि :-

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

1) ऐसे बालकों में बुद्धि और उपलब्धि में सह-सम्बन्ध होता है।
2) ऐसे बालक के क्षेत्र में अधिक उपलब्धियाँ होती हैं।
3) प्रतिभावान बालकों की रुचियाँ एवं अभिरुचियाँ भी व्यापक होती हैं।
4) उनका शब्द-भण्डार विशाल होता है। उनका सामान्य ज्ञान भी अच्छा होता है।
5) ये बालक अधिक पाठ्यक्रम को कम समय में समझने की क्षमता रखते हैं।

E) सहगामी क्रियाएँ :-
1) वे प्रत्येक चीज को विस्तार से जानने के इच्छुक होते हैं।
2) ये बालक स्कूल जाने में अधिक रुचि लेते हैं।
3) पढ़ाई के साथ-2 अन्य मंचीय एवं रंगमंचीय कार्यक्रमों में भी प्रतिभावान बालक बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

F) बौद्धिक विशेषताएँ :-
1) इनमें तर्क करने की योग्यता भी अधिक होती है।
2) इनकी अवधान-विस्तृति भी अधिक होती है।
3) अपना ध्यान अधिक केन्द्रित कर सकते हैं।
4) इनकी स्मृति अन्य बालकों की अपेक्षा बेहतर होती है।
5) इनकी प्रतिक्रियाएँ तात्कालिक होती हैं।
6) ये स्पष्टवादी, फुर्तीले और बेहतर आत्म-अभिव्यक्ति वाले होते हैं।
7) इनका अधिगम तीव्रगति से होता है तथा आसानी से होता है।

H) निषेधात्मक विशेषताएँ :-
1) ऐसे बालक बड़े नटखट और शोर मचाने वाले होते हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

2) अगर कोई कार्य उनकी रुचि का न हो तो वे लापरवाह हो जाते हैं।

3) ऐसे बालकों की रुचि दूसरों की आलोचना करने में अधिक हो जाती हैं।

> प्रतिभावान बालकों की पहचान :-

1) बुद्धि परीक्षाएँ
2) अभिरुचि परीक्षण
3) सम्बन्धित व्यक्तियों से सूचनाएँ
4) विशेषताओं के आधार पर
5) उपलब्धि परीक्षण

> प्रतिभावान बालकों की समस्यायें :-

1. परिवार में समायोजन
2. स्कूल में समायोजन
3. समाज में समायोजन
4. लापरवाही
5. स्कूल विषयों और व्यवसायों के चयन समस्या
6. अभिमान का विकास
7. कार्य करने की गति
8. शिक्षण विधियाँ
9. गिरोहों में शामिल होना
10. उच्च बुद्धि का गलत प्रयोग

> प्रतिभावान बच्चों की शिक्षा :-

1. योग्य तथा नेक अध्यापक
2. सहगामी क्रियाओं की विशेष व्यवस्था
3. पुस्तकालय सुविधाएँ

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner